B-4
L-14
World
Geography

* भू-मध्य रेखा निम्नलिखित देशों से होकर गुजरती है:-

- इक्वाडोर, कोलंबिया, ब्राजील (द० अमेरिका)
- साउतोमे और प्रिंसिप, गैबोन, रिपब्लिक ऑफ कॉंगो, डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कॉंगो, युगांडा, केन्या, सोमालिया (अफ्रीका)
- मालदीव, इण्डोनेशिया, किरिबाती (एशिया)

* ग्रीनविच मेरीडियन और अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा:-

- अंतर्राष्ट्रीय तिथि रेखा कुछ दूरी तक प्रशांत महासागर के मध्य में 180° देशांतर के मध्यान्ह रेखा का अनुसरण करती है ताकि यह देशों को पार न कर सके, यह रूस के सुदूर पूर्व और प्रशांत क्षेत्र के अन्य द्वीप समूहों के आसपास से गुजरती है।
- ग्रीनविच मेरीडियन उत्तर से दक्षिण तक 8 देशों से होकर गुजरती है -

1. यूनाइटेड किंगडम (विशेषकर इंग्लैण्ड)
2. फ्रांस
3. स्पेन
4. अल्जीरिया
5. माली
6. बुर्किना फासो
7. टोगो
8. घाना

Scanned by CamScanner

* कर्क रेखा निम्नलिखित देशों से होकर गुजरती है:-
अल्जीरिया, नाइजर, लीबिया, मिस्र, सउदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, ओमान, बांग्लादेश, म्यांमार, चीन, ताइवान, मैक्सिको, बाहमास, पश्चिमी सहारा, मौरीतानिया और माली।

* मकर रेखा निम्नलिखित देशों से होकर गुजरती है:-
10 देश → अर्जेंटीना, चिली, नामीबिया, दक्षिण अफ्रीका, मेडागास्कर, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, पैराग्वे, बोत्सवाना, मोजाम्बिक।

* आबादी के अनुसार महाद्वीपों का अवरोही क्रम:-
एशिया > अफ्रीका > यूरोप > उत्तरी अमेरिका > दक्षिणी अमेरिका > ओशेनिया

* विश्व में सर्वाधिक आबादी वाले देशों का अवरोही क्रम:-
भारत > चीन > अमेरिका > इण्डोनेशिया > पाकिस्तान > नाइजीरिया > ब्राजील > बांग्लादेश > रूस > मैक्सिको > इथियोपिया > जापान

* क्षेत्रफल के अनुसार, महाद्वीपों का अवरोही क्रम:-
एशिया > अफ्रीका > उत्तरी अमेरिका > दक्षिणी अमेरिका > अंटार्कटिका > यूरोप > ऑस्ट्रेलिया

Scanned by CamScanner

पृथ्वी की आंतरिक संरचना

• पृथ्वी की आंतरिक संरचना एक परतदार संरचना है, जिसमें तीन संकेन्द्रित परतें हैं:-

(i) पर्पटी (ii) मैंटल (iii) क्रोड

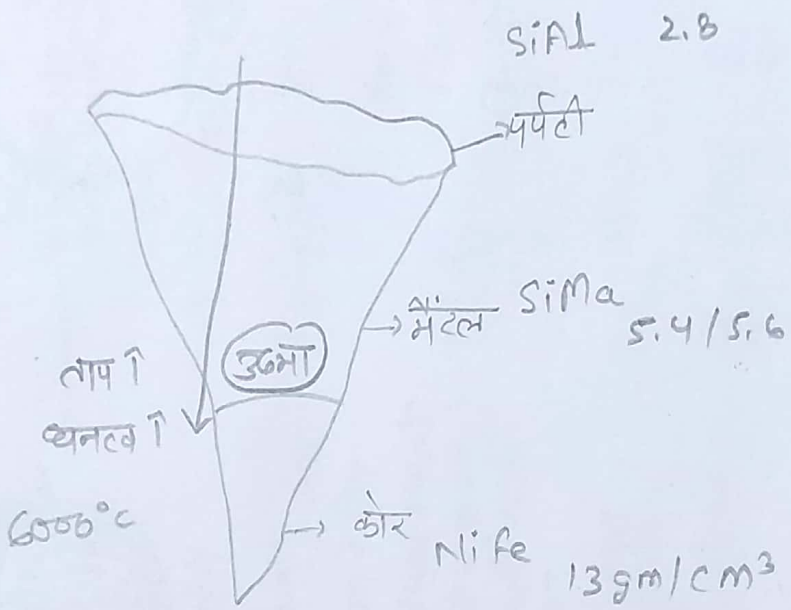

* पृथ्वी की उत्पत्ति:-

ब्रह्माण्ड में व्याप्त पदार्थ के कण गुरुत्व बल के कारण एक-दूसरे की ओर आकर्षित होकर कुछ केन्द्रों में संकेन्द्रित होने लगते हैं इस दौरान कणों के आपस में टकराने से उल्मा उत्पन्न होती है और तापमान बढ़ने लगता है और ब्रह्माण्ड के कणों का यह पुंज नेबुला कहलाता है। कणों के टक्कर के कारण नेबुला घूमने लगता है और इसके केन्द्र में तापमान इतना अधिक हो जाता है कि नाभिकीय संलयन की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है।

Scanned by CamScanner

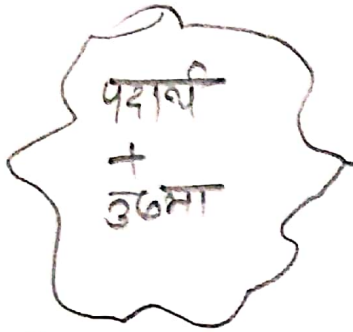

ठंडा होने पर

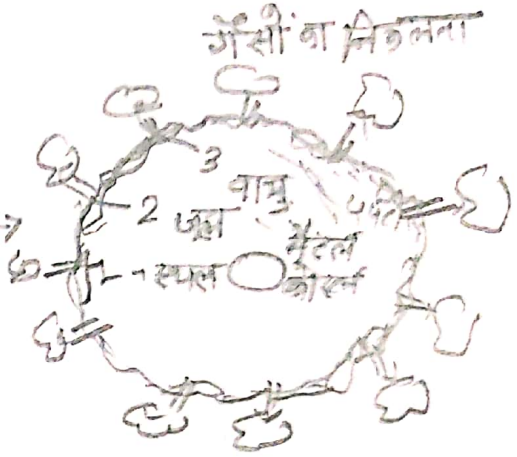

प्रारंभिक पृथ्वी
(आग का गोला)

1

ग्रहीय संलयन
(Accretion)

जटिल पपड़ी

(2) पृथ्वी के अंदर
उष्मा के स्रोत
↳ Residual Heat
(अवशेष उष्मा)
↳ रेडियोधर्मी पदार्थों
की उष्मा
↓
तापमान ज्यादा

(3) गैस / वाष्प / ठोस

गैस ← जलवाष्प
SO_2, NO_2, H_2S, NH_3
आदि
का निकलना
↓
(S- गैसिंग)

Scanned by CamScanner

* मैंटल संवहन व आंत्रजनित बलों का स्थलमण्डलीय प्रभाव :-

- पृथ्वी की परतदार आंतरिक संरचना में सबसे अधिक आयतन वाली परत मेंटल होती है इसमें पृथ्वी की चट्टानें न तो पूर्ण रूप से तरल हैं न ही ठोस हैं अपितु यह अर्द्धठोस अवस्था वाली परत है।

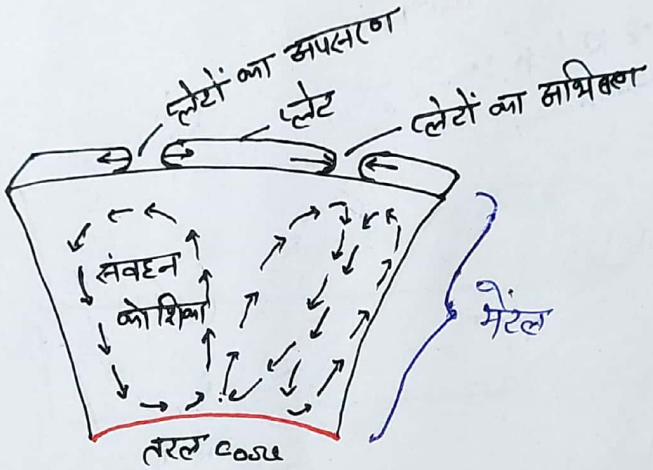

- श्रीमान आर्थर होम्स ने मैंटल संवहन की संकल्पना दी, जिसके अनुसार, मैंटल में गहराई में पायी जाने वाली चट्टानें अत्यधिक गर्म होने के कारण सतह की ओर उठती हैं और सतही ठंडी मैंटल की चट्टानें गहराई की ओर संवहन करती हैं। इस कारण मैंटल के अंदर संवहन कोशिकाओं का निर्माण होता है।
- इन संवहनीय धाराओं के प्रभाव से स्थलमण्डलीय प्लेटें गति करती हैं, जहां ये धाराएं एक-दूसरे से

Scanned by CamScanner

मिलती हैं, वहां स्थलमण्डलीय प्लेटों का अभिसरण होता है इससे वलन क्रिया होती है तथा वलित पर्वतों का निर्माण होता है। जिन क्षेत्रों में संवहनीय धाराएं एक-दूसरे से दूर जाती हैं, वहां स्थलमण्डलीय प्लेटों का अपसरण होता है, जिसमें भ्रंशन की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप भ्रंश घाटी व भ्रंशोत्थ पर्वत का निर्माण होता है।

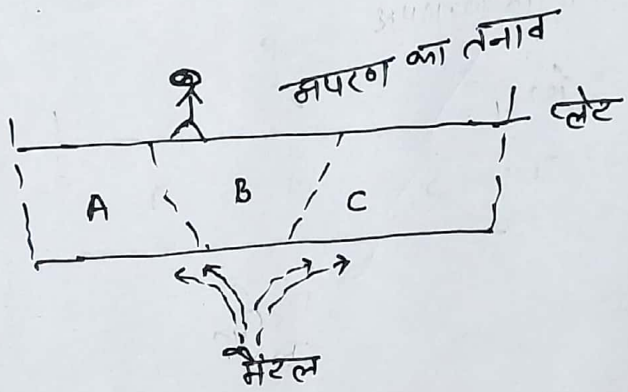

Scanned by CamScanner